वो धारा थी बह गई

सचिन बिजनौरी

© सचिन बिजनौरी, 2025. All rights reserved.

वो धारा थी बह गई
अपने को खुद मे समेटे हुए
वो बस पिघलकर रह गई
वो धारा थी बह गई

मजधारो को बीच मे लिए
कोई कश्ती जैसे गुम खड़ी थी
तीर से जैसे सब कह गई
वो धारा थी बह गई

असमजंस मे थी थोडी व्याकुल
वो नीर भरकर नीर को ही निर्लज कह गयी
वो धारा थी बह गई

बनाकर रास्ते जहाँ पहुची
लगा अब वो मजिल को पा चली
हो गया विलय पतन का
सागर मे सिमट कर रह गई
वो धारा थी बह गई ।